उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय सात:

पवित्रशास्त्र को जीवन में लागू करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. आवश्यकता 3

III. सम्पर्क 5

A. परमेश्वर 5

1. शाश्वत मंत्रणा 6
2. चरित्र 7
3. वाचा की प्रतिज्ञाएँ 7

B. संसार 8

C. लोग 9

1. पापपूर्ण स्वरूप 9
2. धार्मिक विभाजन 10
3. जातियाँ 11

IV. घटनाक्रमों में विकास 11

A. युगान्तरकारी 12

B. सांस्कृतिक 13

C. व्यक्तिगत् 15

V. सारांश 15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय सात:
पवित्रशास्त्र को जीवन में लागू करना

परिचय

हम सभी जानते हैं कि हम अपने सामान्य जीवन में कुछ बातों को अस्थाई रूप से और कुछ बातों को लम्बे समय के लिए प्रयोग करने के लिए लिखते हैं। ठीक इसी तरह से, मसीह के अनुयायियों के लिए भी, एक निश्चित पुस्तक दी गई है जो कि कभी भी अप्रचलित नहीं होगी और यह पुस्तक: बाइबल है। पीढ़ी दर पीढ़ी परमेश्वर के लोगों ने पवित्रशास्त्र से लाभ उठाया है – और हमें भी चाहिए कि हम भी इससे लाभ उठायें, क्योंकि बाइबल के पास परमेश्वर के लिए जीवन यापन करने के लिए प्रत्येक स्थान के लिए और प्रत्येक युग के लिए कहने के लिए बहुत कुछ है। यीशु ने बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में देखा जो कि जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता तब तक परमेश्वर के लोगों के लिए मापदण्ड के रूप में रहेगा। और उसके अनुयायियों के रूप में, हम भी ऐसा ही करते हैं।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* के ऊपर यह हमारा सातवाँ अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "पवित्रशास्त्र को जीवन में लागू करना" या उपयोग करना दिया है। इस अध्याय में, हम जीवन में उपयोग करने के लिए कुछ ऐसे दृष्टिकोणों का सुझाव देंगे जो कि पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को आधुनिक श्रोताओं के लिए प्रासंगिक बनाने में अत्यधिक लाभकारी हैं।

इस श्रृंखला में, हम उपयोग की प्रक्रिया की परिभाषा निम्न तरह से देंगे:

> **बाइबल के एक दस्तावेज के मूल अर्थ को उचित रूप से समकालीन श्रोताओं के साथ इस तरीके से सम्बन्धित करना कि वह उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करे।**

क्योंकि हमारी उपरोक्त परिभाषा हमारे पहले दिए गए मौलिक अर्थ की परिभाषा का उपयोग करती है, इस लिए मूल अर्थ की परिभाषा को स्मरण करना यहाँ पर लाभकारी होगा:

> **वे अवधारणाएँ, व्यवहार और भावनाएँ जिन्हें दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से अपने पहले श्रोताओं को सम्प्रेषित करने के लिए दिए गए दस्तावेज़ में इच्छित किया।**

> **हमें यह समझने की आवश्यकता है कि लेखक ने सच्चाई में क्या कहा, और तब हम उसे जीवन में उपयोग कर सकते हैं। यह उपयोग प्रसंग के अर्थ में से आना चाहिए और जितना ज्यादा हम इसके मूल को जानेंगे उतना ज्यादा यह हमें समझने में सहायता करेगा, क्या हम भी उस तरह की धर्मवैज्ञानिक परिस्थिति में हैं, जिसमें मूल श्रोतगण थे? क्या हम मूसा की वाचा के अधीन हैं? क्या हम भी किसी एक निश्चित वाचा के अधीन हैं? और इसलिए, मूल परिस्थितियाँ, इतिहास और धर्मविज्ञान और प्रासंगिकता हमें उचित रीति से समझने में सहायता करती है। हम अब जानते हैं कि हमें इसका अर्थ मसीह के समाप्त हुए कार्य में से लाना है, क्योंकि हम अब मसीह के समाप्त हुए कार्य की अधीनता में हैं।**
>
> **-डॉ स्टीफन जे. ब्रामर**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब, उपयोग को अर्थात् जीवन में लागू करने की बात को प्राप्त करने की प्रक्रिया सदैव आसान नहीं होती है, क्योंकि हमें उन विशेष घटनाओं के घटनाक्रम की जानकारी देनी होती है जो बाइबल के लिखे जाने और हमारे दिनों के बीच में घटित हुई हैं। परन्तु उपयोग प्राप्त करने की प्रक्रिया का लक्ष्य अब भी वैसा ही है जैसा कि तब था जब पवित्रशास्त्र पहली बार लिखा जा रहा था: अर्थात् परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करे।

मूल अर्थ और उपयोग की बात के बीच में हम सबसे महत्वपूर्ण अन्तर मूल अर्थ की जाँच-पड़ताल के ऊपर हमारे ध्यानाकर्षण से कर सकते हैं जो कि पवित्रशास्त्र की उस मंशा को प्रभावित करता है, जो पहले श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करने के लिए थी। परन्तु उपयोग की व्याख्यात्मक प्रक्रिया का सम्बन्ध इससे है कि कैसे आधुनिक श्रोताओं को इन सभी स्तरों पर प्रभावित किया जाना चाहिए।

उपयोग में लाने वाली बात का पता लगाने के लिए मूलपाठ का मौलिक अर्थ हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मूलपाठ का प्रेरित और अधिकारिक अर्थ होता है। इसलिए, एक मूलपाठ के उचित रूप से आधुनिक उपयोग के लिए इसे मूल अर्थ के साथ सदैव विश्वासयोग्य होना चाहिए। उसी समय, हमारे आधुनिक उपयोग कुछ भावों में मौलिक अर्थ से परे जाना चाहिए क्योंकि इसे आधुनिक समयों, संस्कृतियों और व्यक्तियों को ध्यान में रखना होता है।

बाइबल के एक प्रसंग का मूल अर्थ जानना हमारी सहायता करता है कि हम कैसे इसे हमारे जीवन में लागू कर सकते अर्थात् उपयोग में ला सकते हैं, क्योंकि हम यह जान जाते हैं, कि मूल अर्थ के मुख्य घटक की समझ इसके मूल उद्देश्य को समझने में हैं, अर्थात्, इसके पहले पाठकों को, उनकी परिस्थितियों के आलोक में, उनके संदर्भ के ढाँचे के आलोक में, कि वे परीक्षाओं और सतावों को जिनका वे सामना कर रहे थे, के आलोक में उस समय कितना ज्यादा पवित्रशास्त्र को जानते थे या कितना ज्यादा इसका उपयोग करते थे। यह उनके लिए परमेश्वर की ओर से उपयोग की बात थी। इसका वास्तविक अर्थ उनके जीवनों में पवित्र आत्मा के पवित्रीकरण के उद्देश्य को प्रभावित करने के उद्देश्य से था। ठीक इसी तरह से, आत्मा का हमारे जीवनों के लिए उद्देश्य पवित्र आत्मा के उद्देश्य के साथ निरंतरता में है। इसलिए जितना ज्यादा हम उनकी परिस्थिति, उनकी आवश्यकता को समझते हैं, और इसलिए उतना ज्यादा जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने उन्हें वह मूलपाठ उनके मूल ढाँचे और मूल श्रोताओं को दिया, यह उस प्रक्षेप पथ का निर्माण करता है कि कैसे आत्मा ने उनके जीवन, और उनकी परिस्थिति में मूलपाठ को लागू करता अर्थात् उपयोग में लाया। और जब हम अपने जीवनों में मूलपाठ को लागू करते हैं तो यह हमारे लिए पास्टर, प्रचारक, शिक्षक के रूप में एक मार्गदर्शक होने चाहिए। हम यह पूछते हैं कि कैसे परमेश्वर ने उनके जीवनों में तब एक परिवर्तन को लाया, कैसे उनके जीवनों में एक तब विभिन्नता को लाया और वह कैसे आज के समय में पवित्र आत्मा के उद्देश्य में हमें मसीह के स्वरूप की समानता में लाने के लिए इसे लिए चल रहा है?

-डॉ डेनिस ई. जॉनसन

उपयोग के लिए पाठ को प्राप्त करने की प्रक्रिया के ऊपर हमारा विचार विमर्श तीन विषयों को स्पर्श करेगा: सबसे पहले, हम उपयोग की बात की आवश्यकता के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। दूसरा, हम उन सम्पर्कों की जाँच करेंगे जो कि मूल अर्थ और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में हैं जो कि उपयोग की बात को प्राप्त करना सम्भव करते हैं। और तीसरा, हम उन कुछ मुख्य विकसित हुई बातों को देखेंगे जो कि जिस समय बाइबल लिखी गई थी और आज के समय के जीवन के बीच में घटित हुई हैं। आइए सबसे पहले उपयोग की बात को आवश्यकता से आरम्भ करें।

आवश्यकता

सुनिए कैसे याकूब में उपयोग की आवश्यकता के बारे में याकूब 1:21-25 बात करता है।

इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा

देते हैं। क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो, और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है। इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर नहीं, पर वैसा ही काम करता है (याकूब 1:21-25)।

याकूब ने सिखाया कि यह जानना ही काफी नहीं है कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है। पवित्रशास्त्र से उचित तरीके से लाभ प्राप्त करने के लिए, हमें इससे प्रभावित होना आवश्यक है; हमारी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं में परिवर्तन आना आवश्यक है। यदि हम परमेश्वर की ओर से आशीष प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस तरह के उपयोग की बात प्रत्येक विश्वासी के लिए अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु उस प्रक्रिया के बारे में क्या जो कि हमें उपयोग की बात को प्राप्त करने के परिणाम की ओर लेकर चलता है? क्या हमारी अवधारणाओं, व्यवहार और भावनाओं को प्रभावित किये जाने लिए किए गए प्रयासों को निर्धारित करना वास्तव में आवश्यक है?

ठीक इसी तरह से, पवित्रशास्त्र को... एक व्यक्ति के प्रतिदिन के जीवन के लिए उपयोगी और प्रासंगिक बनाने के लिए सबसे उत्तम तरीका उस संदर्भ के बारे में सोचना है जिसमें पवित्रशास्त्र के मूल्य, या पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ निहित हैं, या जिसमें पवित्रशास्त्र का धर्मविज्ञान लागू होता है। और एक बार फिर से, यह एक तरह से मूलपाठ के प्रकार के ऊपर निर्भर करता है जिसका मैं उपयोग कर रहा हूँ, परन्तु अक्सर यहाँ पर ऐसे व्यवहार हैं जो कि पवित्रशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण हैं – जैसे कि हम परमेश्वर के बारे में क्या सोचते हैं, जिस तरह से हम अपने पड़ोसी के बारे में सोचते हैं, कि किस तरह का तरस मुझमें होना चाहिए जिसे मैं उस पर प्रगट करूँ, ऐसी बातें – जो मुझे कहती हैं कि मुझे कैसे जीवन यापन करना चाहिए। और वे मूल्य मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मैं सोचता हूँ कि जब हम बाइबल का अध्ययन एक पुस्तक के इतिहास के रूप में या इसके धर्मविज्ञान को कल्पना की शब्दावली में करने की मंशा करते हैं और हम जो कुछ इसका प्रसंग हमें करने के लिए या कैसे उसके लोग होना चाहिए के बनने के लिए बुलाहट दे रहा है उसमें कोई भी नैतिक आयाम को नहीं जोड़ते हैं, तो हमारे सामने एक समस्या होती है। परन्तु यदि हम पवित्रशास्त्र के सम्बन्धात्मक, नैतिक आयाम को ध्यान में रखें जो कि निरन्तर इसकी प्रत्येक घटना में चलता रहता है, तो स्पष्ट तौर पर इसके प्रत्येक प्रसंग का एक उपयोग हो सकता है जो कि हमें जिस तरह से हम जीवन यापन करते हैं उसके प्रति ज्यादा संवेदनशील बनाने के लिए सोचने पर मजबूर कर सकता है।

- डॉ डेरिल ऐल. बोक

1 कुरिन्थियों 10:11 में, पौलुस ने समकालीन उपयोग की खोज के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए निम्न शब्दों का प्रयोग किया है:

परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थीं, और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं (1 कुरिन्थियों 10:11)।

इस अध्याय के संदर्भ में, पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों को स्मरण दिला रहा था कि निर्गमन और गिनती की पुस्तक में ऐसी कहानियों के बारे में कहा है जो कि पलायन करते हुए इस्राएलियों के ऊपर आए हुए न्याय के बारे में हैं जो उन्होंने उस समय सहन किया जब उन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया। और इस आयत में, उसने उन आवश्यक कदमों को उठाया जो कि कुरिन्थियों की कलीसिया में इन कहानियों के द्वारा लागू किए जा सकते थे।

पौलुस ने पुराने नियम की कहानियों को नए नियम की कलीसिया के ऊपर लागू दोनों अर्थात् मूल श्रोताओं और उसके कुरिन्थियों के श्रोताओं के मध्य में सम्पर्क और निरन्तरता को और उन घटनाओं या परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए किया जो कि मूसा के दिनों और उसके दिनों के मध्य में घटित हुई थी।

एक तरफ तो, पौलुस ने दो तरह के श्रोताओं को उनसे यह बिनती करते हुए सम्बन्धित किया कि "वे कहानियाँ हमारी चितावनी के लिये लिखी गई थीं" पौलुस के लिए इस तरह के सम्पर्क को निर्मित करना अत्यन्त कठिन था। निर्गमन और गिनती मूल रूप से उन लोगों के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

लिए लिखे गए थे जो कि मिस्र में से पलायन करके आए हुए इस्राएलियों की दूसरी पीढ़ी की सन्तान थी। उन्हें इन लोगों की चेतावनी के लिए इसलिए लिखा गया था कि वे लोग पहली पीढ़ी की असफलता को पुन: न दुहराएँ। इसलिए, पौलुस ने सर्वप्रथम कुरिन्थियों के विश्वासियों और मूल श्रोताओं के बीच में समानताओं को स्थापित किया: कुरिन्थियों की कलीसिया में असफलता का खतरा था। इसलिए यह कहानियाँ उन्हें वैसे ही चेतावनी देती हैं जैसे की वे मूल श्रोताओं को चेतावनी देने के लिए लिखी गई थीं।

एक तरफ तो, पौलुस ने उसके उपयोग को उन महत्वपूर्ण घटनाओं पर ध्यान देते हुए जो कि मूसा के समय से घटित हुई थी, अनुमोदित किया। इस्राएल की असफलता इस्राएलियों की पहली पीढ़ी में ही घटित हुई थी, परन्तु वे पौलुस के श्रोताओं के लिए और अन्य सभी विश्वासियों के लिए लिखे गए थे। पुराने नियम के अनुभवों के विवरण कलीसिया के लिए, "जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं" के लिए उदाहरणों और चेतावनियों में परिवर्तित हो जाते हैं।

यह भाव कि "जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं" नए नियम के लेखकों की ओर से लिखे जाने वाले कई तरीकों में से एक है जिसमें वे नए नियम को पुराने नियम की समयावधि से भिन्न करते हैं। इन शब्दों के साथ, पौलुस ने यह स्वीकार किया है कि कुरिन्थियों को छुटकारे वाले इतिहास में घटित हुई घटनाओं का लाभ प्राप्त हुआ है जो कि निर्गमन और गिनती के मूल श्रोताओं को प्राप्त नहीं था। कुरिन्थ के विश्वासी मूसा के लगभग 1,000 साल बाद रह रहे थे। वे मूल श्रोताओं की तरह मिस्र से कनान की ओर यात्रा नहीं कर रहे थे; वे तो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की ओर यात्रा कर रहे थे। उन पर अन्तिम समय की पूर्णता आ पहुँची थी। परिणामस्वरूप, पौलुस की ओर से उपयोग की बातें इन घटनाओं के विवरण से मिलती हैं। और पौलुस बाकी के 1 कुरिन्थियों 10 में इन भिन्नताओं के ऊपर प्रकाश डालता है, जहाँ पर वह कुरिन्थियों को चेतावनी देता है कि वे उनकी कलीसिया के साथ उनके सम्बन्धों में या व्यक्तिगत् मसीही जीवनों में कभी भी असफल न हों।

पौलुस का कुरिन्थियों के विश्वासियों के लिए निर्गमन और गिनती से उपयोग उस मूल प्रक्रिया के बारे मे प्रकाश ड़ालता है जो कि प्रत्येक उस समय घटित होता है जब पवित्रशास्त्र का उपयोग होता है। उपयोग की जाने वाली बात में सदैव अर्थात् मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच के सम्बन्ध और उन घटनाओं को ध्यान में रखना चाहिए जो कि उनके बीच में घटित हुई हैं। हमें इन सम्बन्धों और इन घटनाओं के विवरणों को स्वीकार करने की आवश्यकता है यदि हमें हमारे आज के जीवनों के लिए पवित्रशास्त्र से उचित उपयोगों को प्राप्त करना है।

अब क्योंकि हमने उपयोग की आवश्यकता को देख लिया है, इसलिए आइए अब हम हमारे ध्यान को बाइबल की पुस्तकों के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के बीच के सम्बन्ध और निरन्तरताओं की ओर केन्द्रित करें।

सम्पर्क

यह मूल प्राचीन और आधुनिक श्रोताओं के बीच के सम्बन्ध और निरन्तरता है जो बाइबल के मूलपाठ को आधुनिक लोगों के लिए प्रासंगिक बनाता है। और इन निरन्तरताओं का वर्णन करने के लिए असँख्य तरीके हैं।

इस अध्याय में, हम इन सम्पर्कों को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत करेंगे। सर्वप्रथम, हम यह देखेंगे कि दोनों तरह के श्रोताओं के पास वही एक परमेश्वर है। दूसरा, वे एक ही जैसे संसार में रहते हैं। और तीसरा, वे एक ही तरह के लोग हैं। आइए हम इनमें से प्रत्येक श्रेणी को, इस सच्चाई को देखते हुए देखना आरम्भ करें कि उनके पास वही एक परमेश्वर है।

परमेश्वर

पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि केवल एक ही परमेश्वर है जिसमें पवित्रशास्त्र के सभी श्रोतागण उनकी विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता को प्रगट करते हैं। और जैसा कि पारम्परिक मसीही धर्मविज्ञान शिक्षा देता है कि, परमेश्वर अपरिवर्तनीय, अर्थात् वह कभी परिवर्तित नहीं होता है। क्योंकि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, और क्योंकि उसके प्रति आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता विश्वव्यापी दायित्व है, इसलिए पवित्रशास्त्र की उसके मूल श्रोताओं और उसके आधुनिक श्रोताओं के बीच के सम्बन्ध के लिए की गई उसकी मंशा के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव के साथ शक्तिशाली सम्पर्क है।

यह कहना कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, का अर्थ है कि वह अपने अस्तित्व, सिद्धता, उद्देश्यों, और प्रतिज्ञाओं में कभी परिवर्तित नहीं होता है। इसलिए वह अपने अस्तित्व में, उसके स्वभाव में, उसके तत्व में, उसकी सिद्धता में, जिस मात्रा में वह इन गुणों को, उसके उद्देश्यों को अपने में रखता है, उसी मात्रा में वह जो कुछ करना चाहता है उसे निर्धारित करता, प्रतिज्ञा करता है, जो कुछ उसने हमें कहा है वह उसे पूरा करेगा। इस तरह से परमेश्वर उन तरीकों में परिवर्तित नहीं होता है। ऐसा कहने का यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर हमसे गतिशील, सम्बन्धात्मक रूप में, व्यक्तिगत् तरीके से सम्बन्धित नहीं होता है। इसलिए वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है, वह हमारे पापों के लिए दुखित होता है, वह हमारी विश्वासयोग्यता में हर्षित होता है। और इसलिए ऐसा कहा गया है कि परमेश्वर आवश्यक रूप से अपरिर्वतनीय है, परन्तु सम्बन्धात्मक रूप से परिवर्तनशील है। हमारे साथ जो कुछ वह अपने सम्बन्धों में करने जा रहा है, उसकी एक मात्रा है जिसमें वह इसे स्वीकार करता है, परन्तु उसी समय वह अपने आवश्यक गुणों को स्थाई बनाए रखता है।

- डॉ के. ऐरिक थोएन्नेस

परमेश्वर, अर्थात् त्रिएक परमेश्वर, के कई विशेष गुणों में से एक गुण उसकी अपरिवर्तनीयता है। यह वह शब्दावली है जिसमें आप धर्मविज्ञान के कई मूलपाठों को पाएंगे। अपरिवर्तनीयता का अनुवाद "न बदलने" में किया जा सकता है। और यह वास्तव में अद्भुत समाचार है क्योंकि हम हमारे जीवनों में, हमारे संसार में, हमारे सम्बन्धों में, और यहाँ तक कि हमारे बहते हुए जीवनों की प्रत्येक वस्तु के अस्थायित्वपन और क्षणभंगुरता से जागरूक हैं। मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर का वर्णनकर्ता ब्रह्माण्ड के लिए एक निर्णायक बिन्दु है। ऐसा वहाँ पर क्या है जो हमारे प्राणों को परमेश्वर के दर्शन के लिए बेचैन कर देता है जो कि आज, कल और युगानुयुग एक जैसा है? मैं सोचता हूँ कि यह गहन मनोवैज्ञानिक और आत्मिक आवश्यकता है जिसकी हम सभों को जरूरत है जो कि ठोस चट्टान है, जो कि भरोसेमंद है, जो हमारे प्राणों के लिए एक लंगर के रूप में उस समय कार्य कर सकती है जब पहाड़ हिल रहे होते हैं और सब कुछ ऐसा आभासित होता है कि समुद्र में जा गिरेगा...हम इस अपरिवर्तनीय परमेश्वर में अपनी सामर्थ्य को पाते हैं।

- डॉ ग्लीन स्कोर्जी

दिव्य अपरिवर्तनीयता की बाइबल आधारित अवधारणा का निहितार्थ यह नहीं है कि परमेश्वर अक्रियाशील है। बाइबल की शब्दावली में, वह एक अक्रियाशील देवता एक मूर्ति के जैसा मूल्यहीन है। परन्तु पवित्रशास्त्र का परमेश्वर निरन्तर उसकी सृष्टि के साथ वास्तव में और अर्थपूर्ण तरीके से पारस्परिक सम्बन्ध बनाता है।

पारम्परिक मसीही धर्मविज्ञान इस बात पर ठीक ही जोर देता है कि परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं। सर्वप्रथम, परमेश्वर की शाश्वत मंत्रणा, या इतिहास के लिए परमेश्वर की अन्तिम योजना, अपरिवर्तनीय है।

शाश्वत मंत्रणा

यद्यपि विभिन्न मसीही परम्पराएँ परमेश्वर की शाश्वत योजना को विभिन्न तरीके से समझते हैं, हम सभों को इस बात से सहमत होना चाहिए कि सब कुछ परमेश्वर ने किया है, कर रहा है, और वह एक एकीकृत योजना के अंश के रूप में करेगा। परमेश्वर सब कुछ जानता है, और वह इस ज्ञान का उपयोग इतिहास को अन्त की ओर ले चलने के लिए प्रयोग कर रहा है, जिसके लिए उसने इसे रचा है। जैसा कि परमेश्वर ने यशायाह 46:10 में कहा है कि:

मै तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा (यशायाह 46:10)।

और जैसा पौलुस ने इफिसियों 1:4, 11 में व्यक्त किया है कि:

जैसा उस ने [मसीह] हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में [मसीह] चुन लिया, उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने (इफिसियों 1:4, 11)।

पौलुस इसे स्पष्ट कर देता है कि परमेश्वर के पास एक ऐसी योजना है जिसमें सब कुछ सम्मिलित है। और यह योजना समय के आरम्भ होने से पहले निर्धारित की गई है उस समय से जब उसने विश्वासियों के लिए मुक्ति को "चुना" या ठहराया था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, विभिन्न परम्परायें पूर्वनिर्धारण अर्थात् पहले से ठहराये जाने का विभिन्न तरह से व्याख्या करती है। परन्तु प्रश्न के उत्तर से आगे यह है कि परमेश्वर ने इसे पहले से ही निर्धारित कर दिया था इससे पहले कि उसने इस संसार को रचा। पूर्वनिर्धारण उसकी शाश्वत मंत्रणा का एक अंश मात्र था। और ये शाश्वत मंत्रणा अपरिवर्तनीय है क्योंकि परमेश्वर सभी वस्तुओं को इसकी समानता में आने देना चाहता है।

परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता की योजना हमें यह सुनिश्चित करती है कि यदि हम निकटता से देखें, तो पाएंगे कि परमेश्वर के पुरातन समय के तरीके उसके आज के तरीकों के अनुरूप हैं। कुछ स्तरों पर, परमेश्वर की उसके प्राचीन लोगों के लिए योजना और हमारे लिए उसकी इच्छा एक जैसी ही है क्योंकि वह दोनों उसकी सृष्टि के लिए उसके उद्देश्य की अपरिवर्तनीयता में सही आकार में आती है।

दूसरे स्थान पर, परमेश्वर उसके चरित्र में भी अपरिवर्तनीय है। अपने तत्व में, व्यक्तित्व में और गुणों में वो कभी भी परिवर्तित नहीं होता है।

चरित्र

अब सुनिश्चित करने के लिए, परमेश्वर उसके चरित्र के विभिन्न पहलुओं को अन्य समयों से कई बार मुख्य रूप से अधिक प्रकाशित करता है। कई बार वह उसकी दया को, तो कई बार वह उसके क्रोध को प्रकट करता है। कई बार वह उसकी सर्वज्ञानी होने को प्रकट करता है और अन्य समयों में वह इसे छिपा लेता है। परन्तु उसके गुणों की पूरी मात्रा – उसके अन्नत स्वभाव – सदैव एक जैसा ही बना रहता है। इसलिए ही याकूब 1:17 में, याकूब परमेश्वर के लिए इस तरह से वर्णन देता है:

ज्योतियों का पिता... में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है (याकूब 1:17)।

परमेश्वर का अपरिवर्तनीय चरित्र हमें यह देखने में सहायता करता है कि मूल अर्थ और पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोग के मध्य सदैव ही विशेष सम्पर्क रहेंगे। जब एक विशेष प्रसंग एक दिव्य गुण के बारे में बात करता है, तो मूल श्रोताओं को सदैव इस गुण को परमेश्वर के अन्य गुणों के संदर्भ के मध्य में समझने की अपेक्षा करनी चाहिए। कुछ इसी तरीके से, आधुनिक श्रोतागणों से अपेक्षा की जाती है कि वह पवित्रशास्त्र की प्रत्येक बात के ऊपर जोर देते हुए इसे ऐसे अपने जीवन के ऊपर लागू करे कि यह परमेश्वर के किसी अन्य गुण की उपेक्षा न करे। इसी कारण से, परमेश्वर के अपरिवर्तनीय गुण सदैव मूल अर्थ और आधुनिक उपयोगों के मध्य समानता की एक मात्रा को निर्मित करते हैं।

तीसरे स्थान पर, परमेश्वर न बदलने वाला या अपरिवर्तनीय उसकी वाचा की प्रतिज्ञाओं में है। परमेश्वर उस प्रत्येक बात को पूरा करेगा जिसकी शपथ उसने वाचा में ली है।

वाचा की प्रतिज्ञायें

कई बार मसीही विश्वासी यह सोच कर गलती कर जाते हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने कभी भी कहा है वह प्रतिज्ञा है। परन्तु वास्तव में परमेश्वर केवल उसे ही प्रतिज्ञा के रूप में लेता है जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है, या जिसकी उसने वाचा बान्धी है, या एक शपथ को लिया है। जैसा कि हम गिनती 23:19 में पढ़ते हैं कि:

ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उस ने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उस पूरा न करे? (गिनती 23:19)।

जब परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है, तो उसका वचन अपरिवर्तनीय होता है। अन्यथा, वह अपने मन को परिवर्तित करने के लिए स्वतन्त्र है। उत्पत्ति 15 पर ध्यान दें जहाँ पर परमेश्वर ने कहा कि वह अब्राहम के वंश को तारों के समान असँख्य बना देगा। अब्राहम उसके इस प्रस्ताव के लिए धन्यवादी था, परन्तु उसने फिर भी परमेश्वर से कहा कि वह इस प्रतिज्ञा को अवश्य पूरी करे। इसलिए, परमेश्वर अपनी प्रतिक्रिया उसके साथ एक वाचा बाँन्धते हुए पूरी करता है।

ऐसी घटनायें, जहाँ परमेश्वर ने एक प्रतिज्ञा को नहीं बनाया है, उसके वचनों को श्राप के लिए खतरे स्वरूप या आशीषों के प्रस्ताव के रूप में समझ लिया गया है। उदाहरण के लिए, योना की पुस्तक को स्मरण करें जहाँ पर परमेश्वर नीनवे को नाश करने की चेतावनी देता है, परन्तु फिर वह पछताता है जब उसके लोग पश्चाताप करते हैं। बिना किसी प्रश्न के, परमेश्वर ने अपने मन को नीनवे को उस समय नाश होने से रोकने के लिए अपने मन को परिवर्तित कर लिया। परन्तु जब उसने उन्हें बचाया तो उसने किसी भी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ा। वाचा की प्रतिज्ञायें ऐसी प्रतिज्ञायें हैं जिसमें परमेश्वर ने वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरी करने के लिए शपथ ली है।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का प्रत्येक प्रकाशन यह मान लेता है कि परमेश्वर उसकी वाचा को और उसकी वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरी करेगा। इसी प्रकाश में मूल श्रोताओं को प्रत्येक प्रसंग को समझना चाहिए था और आधुनिक श्रोताओं को भी ऐसा ही करना चाहिए। हमें परमेश्वर की अपरिवर्तनीय प्रतिज्ञाओं में पूर्ण भरोसा होना चाहिए। और उसके प्रस्ताव और चेतावनियाँ हमें उसके प्रति आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करने चाहिए।

अब क्योंकि हमने यह देखा लिया है कि हमारे पास वही परमेश्वर है जो कि पवित्रशास्त्र के पहले प्राप्तकर्ताओं के पास था, इसलिए आइए हम उस सच्चाई के ऊपर देखें कि हम एक जैसे ही संसार में रहते हैं।

संसार

युगों से दार्शनिकों ने इस बात पर मल्लयुद्ध किया है कि क्या संसार स्थिर है या फिर परिवर्तित हो रहा है। सामान्य अनुभव हमें यह कहता है कि, कई तरह से, दोनों बातें सत्य हैं। परमेश्वर की सृष्टि सदैव परिवर्तित हो रही है, परन्तु इस संसार के कई गुण पवित्रशास्त्र के प्रत्येक श्रोता के लिए वैसे ही स्थिर बने रहे हैं। जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे दिनों में लागू करते हैं, तो हमें इन दोनों सत्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

एक पुरानी कहावत है जो यह कहती है कि, "इतिहास स्वयं को दोहराता है," और हम समझते हैं कि वर्तमान घटनायें अक्सर उन घटनाओं के अनुरूप होती हैं जो कि अतीत में घटित हो चुकी हैं। पवित्रशास्त्र के मूल पाठकों के समान ही, हम ऐसे संसार में रहते हैं जिसे परमेश्वर ने रचा है। और यद्यपि हम पाप में गिर गए हैं, परन्तु फिर भी हमने परमेश्वर के छुटकारे को अनुभव किया है। परमेश्वर के पुराने नियम के विश्वासयोग्य लोगों ने सताव का सामना अन्य लोगों से और शैतानिक शक्तियों से किया था, और हम भी आज वैसे ही विरोध का सामना करते हैं। वे जय पाने के लिए परमेश्वर की सहायता पर निर्भर हुए; हम भी उसकी सहायता पर निर्भर होते हैं। हम भी उस स्थिरता को देख सकते हैं जिसे हम अक्सर नियमित नमूने या प्रकृति की व्यवस्था कह कर पुकारते हैं। जब पवित्रशास्त्र सूर्य के उदय और अस्त होने, मानवीय बीमारियों, भोजन और पानी की आवश्यकता, और अन्य असँख्य वस्तुओं के बारे में बात करता है, तो हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि हम उस एक जैसे ही संसार में रहते हैं जैसा कि पवित्रशास्त्र को प्राप्त करने वाले पहले श्रोताओं के पास था।

और बहुत ज्यादा विशेष और संकीर्ण तरीकों से, हम पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के संसार और हमारे आज के संसार के बीच में कई महत्वपूर्ण समानताओं को पाते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन 20 में इस्राएल को दी गई दस आज्ञाएँ बाकी के पुराने नियम के लोगों के जीवन यापन के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि को प्रदान करती हैं। इन्हीं आज्ञाओं को एक बार फिर मार्गदर्शन के लिए नए नियम के लोगों के जीवनों के लिए प्रयोग किया गया है। और जैसा कि पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16, 17 में शिक्षा दी है, यही आज्ञाएँ निरन्तर कलीसिया के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती हैं।

इसी तरह से, परमेश्वर का दाऊद को परमेश्वर के लोगों के लिए स्थाई राजवंश के रूप में राजा चुनना पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य के लिए, साथ ही नए नियम में दाऊद के महान् पुत्र यीशु के शासक होने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रदान करता है। और जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 22:16 जैसे स्थानों से सिखते हैं कि कलीसिया निरन्तर यीशु को उसका राजा और प्रभु मानते हुए उसकी सेवा करती है क्योंकि वह दाऊदवंशीय राजा के रूप में स्थाई तौर पर शासन कर रहा है।

इस तरह के उदाहरण यह प्रकट करते हैं कि हमारे संसार और पवित्रशास्त्र के संसारों के पहले श्रोताओं के मध्य सम्बन्ध बाइबल के आधुनिक उपयोगों को निर्धारित करने में हमारी सहायता कर सकता है।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि पवित्रशास्त्र के सभी श्रोताओं के पास वही परमेश्वर था और वह एक जैसे ही संसार में रहते थे, इसलिए आइए अब हम उन सम्पर्कों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करें जो कि वहाँ पर विद्यमान थे क्योंकि हम एक जैसे ही लोग हैं।

लोग

यहाँ पर कम से कम तीन तरीके हैं जिसमें आधुनिक लोग बहुत ज्यादा उन लोगों के जैसे ही थे जिन्होंने सबसे पहले पवित्रशास्त्र को प्राप्त किया। सर्वप्रथम, सभी मानवीय प्राणी, चाहे वे कहीं भी क्यों न रहते हों, परमेश्वर का पापपूर्ण स्वरूप हैं। दूसरा, हम धार्मिक विभाजनों के कारण दुख उठाते हैं। और तीसरा, मानवता अभी भी लोगों की एक ही जाति के लोगों सम्मिलित करती है। हम इन सभी समानताओं की खोज, इस सच्चाई के साथ आरम्भ करते हुए करेंगे कि सभी मानवीय प्राणी परमेश्वर का पापपूर्ण स्वरूप हैं।

पापपूर्ण स्वरूप

उत्पत्ति 1:27 जैसे प्रसंगों में, हमें कहा गया है कि जब परमेश्वर ने मानव की रचना की, तो उसने इसे अपने स्वरूप में सृजा। दूसरी अन्य सभी बातों के अलावा, इसका अर्थ यह है कि सारे मानव प्राणी तर्कसंगत, भाषाई, नैतिक और धार्मिक रूप से परमेश्वर के उप-प्रतिनिधि के रूप में हैं।

इसी समय, सारे मानव प्राणी पाप में भी गिरे हुए हैं। मानवता आज के समय में तर्कसंगत, भाषाई, नैतिक और धार्मिक रूप से जिस तरह परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए, उस तरह से करने की योग्यता नहीं रखती है। अविश्वासी इस तरह से व्यवहार करते हैं कि मानो उन्हें परमेश्वर के शासन की अधीनता में आने की कोई आवश्यकता नहीं है। और यहाँ तक कि विश्वासी भी उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने में असफल हो जाते हैं। जैसा कि सुलैमान ने 1 राजा 8:46 में मन्दिर के समर्पण के समय कहा कि:

ऐसा कोई नहीं है जो पाप न करता हो (1 राजा 8:46)।

क्रमबद्ध धर्मविज्ञान में, आप जानते हैं कि, यहाँ पर वह शिक्षा पाई जाती है जिसे हमें सम्पूर्ण भ्रष्टता के नाम से जानते हैं। और उसका अर्थ यह है कि मनुष्य के अस्तित्व की सम्पूर्णता, अर्थात् उसकी सोच, भावना और व्यवहार, यह सब कुछ पाप के कारण दागदार है परिणामस्वरूप यहाँ पर मूलभूत धारणा यह है कि वह जो कुछ करता है, वह परमेश्वर की आज्ञाओं और उसके पवित्र मापदण्डों के विरोध में होता है। इसलिए हाँ, यहाँ पर ऐसी बात है जिसे हम पापपूर्ण स्वभाव कहते हैं। और बाइबल यह कहती है कि यह कितनी बड़ी मूलभूत समस्या है, विशेषकर जब बात परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की होती है।

-डॉ लूईस औरटिजा

इन दिनों में विशेषकर मानवविज्ञान और समाजशास्त्रीय अध्ययन में बड़े प्रश्नों में से एक यह पूछा जाता है कि क्या मानव प्राणियों का पापपूर्ण स्वभाव है या नहीं। और वर्षों से, बारी बारी, मानवीय शिक्षा, मानवीय विकास, मानवीय शिक्षण के बारे में सिद्धान्तों को मूल पाप की चट्टान के ऊपर निर्मित किया गया है, क्योंकि सच्चाई तो यह है कि हम सभों के पास पाप का स्वभाव हैं... इसका अर्थ, सच्चाई तो यह है कि हम मानव प्राप्ति, उपलब्धि, अधिकार और ऐसी ही बातों के साथ लिपटी हुई एक स्वार्थी इच्छा से नियंत्रित है।" यदि आप यह मान लेते हैं कि मानव स्वाभाविक रूप से अच्छा है तो आप मानवीय व्यवहार को समझ नहीं सकते हैं। सच्चाई तो यह है कि, जब आप जाति के इतिहास को देखते हैं, तो आपको कहना होगा कि, नहीं, हम स्वाभाविक रूप से अच्छे नहीं हैं; हम स्वाभाविक रूप से बुराई से भरे हुए आत्म-केन्द्रित हैं। तथापि, बाइबल के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि, इसी समय यह कहती भी है कि, हम परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं। और इस बात को मन में रखते हुए, मानवता के बारे में बाइबल का यह दृष्टिकोण आश्चर्य से भरा हुआ है, क्योंकि कई अन्य मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री बुराई की उपस्थिति को स्वीकार करते हुए, यह कहेंगे कि, "अरे, मानव प्राणी आशाहीन बुराई में असाध्य ढँग से पड़ा हुआ है; हम तो वानरों के ज्यादा आक्रमक रूप हैं, कुल

मिला कर यही सब कुछ है।" और बाइबल यह कहती है कि, "अरे नहीं, ऐसा नहीं है, हम पाप में गिरे हुए हैं, हम परमेश्वर के स्वरूप में सृजे हुए पर इसमें दागदार धब्बे हैं।"

– डॉ जॉन ओसवाल्ट

पवित्रशास्त्र के सभी प्राप्तकर्ता, चाहे वे प्राचीन हों या आधुनिक, उसी एक जैसे समान पापपूर्ण स्वभाव को साझा करते हैं। और एक तरह से या किसी अन्य तरह से, पवित्रशास्त्र का प्रत्येक भाग का मूल अर्थ मनुष्य की इसी परिस्थिति को सम्बोधित करता है। हम सभी परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं जो कि पाप के द्वारा भ्रष्ट हो गया है। क्योंकि हम इन योग्यताओं को पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के साथ साझा करते हैं, इसलिए ये समानतायें बाइबल के प्रत्येक मूलपाठ से अर्थपूर्ण आधुनिक उपयोगों को निकालने में हमारी सहायता कर सकती हैं।

परमेश्वर के स्वरूप के साथ पापपूर्ण हो जाने के साथ ही, पवित्रशास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोताओं एक जैसे ही हैं क्योंकि दोनों धार्मिक विभाजनों से दुख उठाते हैं।

धार्मिक विभाजन समूह

उस समय से जबसे सबसे प्रथम पवित्रशास्त्र प्रेरित किया गया था, यह सदैव से रहा है कि पवित्रशास्त्र के पढ़ने वालों को तीन धार्मिक समूहों में विभाजित कर दिया गया है: अविश्वासी, झूठे विश्वासी, और विश्वासी।

अविश्वासी वे लोग हैं जो कि स्वयं को परमेश्वर के प्रति अधीन होने से इन्कार करने के द्वारा परमेश्वर का शत्रु बना लेते हैं। मानवता का यह समूह उन सभों को अपने में सम्मिलित करता है जिन्होंने परमेश्वर के विशेष प्रकाशनों के बारे में इस्राएल और कलीसिया में नहीं सुना है, और साथ ही वे जिन्होंने सुना भी है।

झूठे विश्वासियों ने परमेश्वर के साथ सतही प्रतिबद्धताओं को निर्मित किया है। उनके पास विश्वासियों जैसा बाहरी दिखावा हो सकता है, परन्तु उनके पास सच्चा विश्वास नहीं है, और जिसके परिणामस्वरूप वे अनन्तकाल के न्याय से छुटकारा पाए हुए नहीं हैं।

इसके विपरीत, विश्वासी वे लोग हैं जो कि परमेश्वर के साथ ईमानदारी, विश्वासयोग्य प्रतिबद्धताओं को निर्मित करते हैं और जिसके परिणामस्वरूप वे पाप से छुटकारा पाए हुए लोग हैं और परमेश्वर के अनन्त न्याय से बचे हुए लोग हैं।

सामान्य शब्दों में, पवित्रशास्त्र के इन तीन धार्मिक समूहों के लिए आधुनिक उपयोगों को इन तीनों समूहों के ऊपर मूल उपयोगों के जैसा ही होना चाहिए। अविश्वासियों के लिए, पवित्रशास्त्र सबसे पहले इस लिए रूपरेखित किया गया है वह उन्हें पाप से रोके, उन्हें उनकी खोई हुई परिस्थिति के बारे में भण्डाफोड़ करे, और उन्हें बचाने वाले पश्चाताप के लिए बुलाहट दे; आधुनिक उपयोग में, हम ऐसा ही करते हैं। झूठे विश्वासियों के लिए, बाइबल के मूलपाठ उन्हें पाप करने से रोकने के लिए रूपरेखित किए गए थे, उनकी ढोंग का भण्डाफोड़ करने के लिए, और उन्हें बचाने वाले पश्चाताप करने के लिए बुलाहट देने के लिए; आधुनिक उपयोग में, हम उसी लक्ष्य की ओर कार्य करते हैं। विश्वासियों के लिए बाइबल के मूलपाठ उन्हें पाप करने से रोकने के लिए रूपरेखित किए गए थे, विफलता के विरूद्ध चेतावनी देने के लिए, और उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह में आभारी जीवन यापन करने की ओर मार्गदर्शन करने के लिए; और आधुनिक मसीही विश्वासियों के रूप में, हम पवित्रशास्त्र को इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लागू करते हैं।

पापपूर्ण स्वरूप और धार्मिक विभाजनों से दुखित होने के साथ ही, मूल और आधुनिक श्रोता एक जैसे ही हैं क्योंकि एक ही जाति के लोग निरन्तर पूरे इतिहास में विद्यमान हैं।

जातियाँ

मानव प्राणियों को विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हम हमारे पास विशेष गुणों या योग्यताओं के अनुसार वर्गीकृत किए जा सकते हैं। कुछ लोग वृद्ध होते हैं और अन्य जवान; कुछ पुरूष और अन्य स्त्रियाँ होती हैं; कुछ धनी और अन्य गरीब होते हैं; कुछ शक्तिशाली होते हैं और अन्य कमजोर होते हैं; और इसी तरह की अन्य बातें हैं। हम अन्य लोगों के साथ हमारे सम्बन्धों के अनुसार भी वर्गीकृत हो सकते हैं। हम हो सकता हो कि माता पिता, बच्चे, रिश्तेदार, स्वामी, सेवक, मित्र या फिर कुछ भी हो सकते हैं। या

हम जो कुछ हमने किया है उसके अनुसार वर्गीकृत हो सकते हैं, जैसे नायक और अपराधी होते हैं या हमारे कार्यों के कारण, जैसे पास्टर और किसान। और यही बात पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के साथ भी सत्य थी।

सच्चाई तो यह है कि, पवित्रशास्त्र के बहुत सारे अंश विशेषकर विशेष किस्म के नस्लों की ओर निर्देशित है। हम ऐसे प्रसंगों को पाते हैं जो कि ऐसे लोगों के ऊपर केन्द्रित है जो कि क्रोध वाले, या प्रेम करने वाले, या आलसी या पश्चाताप करने वाले, या धनी या गरीब हैं। हम ऐसे प्रसंगों को पाते हैं जो कि विशेष कर ऐसे लोगों को सम्बोधित किए गए हैं जिन्हें हम पति, या पत्नियों या बच्चों, या डीकन, या चोर, या कर्मचारियों के रूप में पहचानते हैं।

क्योंकि इसी जाति के लोग हर युग में अस्तित्व में हैं, इसलिए वे मूल श्रोताओं और उनके बाद आने वाले उत्तरोत्तर श्रोताओं के मध्य में अर्थपूर्ण सम्पर्कों को निर्मित करते हैं। और ये सम्पर्क हमारे लिए जीवन में उपयोग करने वाली बातों का मार्गदर्शन करने में सहायता करते हैं। प्राचीन और आधुनिक धनी लोग धन सम्पति के ऊपर दिए हुए प्रसंगों से एक जैसे ही उपयोगों को प्राप्त कर सकते हैं। प्राचीन और धनी अगुवे नेतृत्वपन के ऊपर दिए हुए प्रसंगों से एक जैसे ही उपयोगों को प्राप्त कर सकते हैं। और ऐसे ही अन्य वर्ग के लोग भी। हमारे सारे प्रयास बाइबल को हमारे जीवन में इस बात को स्वीकार करने के द्वारा कि हम इस तरह के सम्पर्कों को पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के साथ साझा करते हैं, लागू करने के लिए हैं।

अब क्योंकि हमने पवित्रशास्त्र में उपयोगों की आवश्यकता की खोज कर ली है, और मूल और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में कुछ महत्वपूर्ण सम्पर्कों पर ध्यान दे चुके हैं, इसलिए आइए हम हमारे ध्यान को उन घटनाक्रमों के विकास की ओर दें जो कि मूल और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में घटित हुई जिन्हें हमारे उपयोग को प्रभावित करना चाहिए।

घटनाक्रमों में विकास

बहुत से लोग जो बाइबल को सावधानीपूर्वक पढ़ते और इसका अध्ययन करते हैं कहते हैं कि कई बार यह परदेशी सी जान पड़ती है मानो कि यह किसी भिन्न संसार से आई हो, और इसमें वास्तव में कुछ भावार्थ हैं जिसमें यह सत्य है। बाइबल की पुस्तकें बहुत समय पहले लिखी गई थीं। वे ऐसी भाषा में लिखी गई थीं जिन्हें हममें से बहुत से पढ़ना नहीं जानते हैं, और ऐसी संस्कृति में जो कि हमसे बहुत ही ज्यादा भिन्न है।और हमारे स्वयं के व्यक्तिगत् जीवन अत्याधिक रूप से पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं से बहुत ज्यादा भिन्न हैं। इसलिए, इस तरह से या अन्य तरह से, हमें इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखना होगा जब हम आधुनिक जीवन में बाइबल को स्वयं पर लागू करते हैं।

आगे आने वाले अध्याय में, हम बड़ी निकटता से उन विशेष तरीकों को देखेंगे जो कि इन भिन्न तरह की भिन्नताओं का वर्णन देंगे। अभी तक, हमने केवल तीन मुख्य घटनाओं के घटनाक्रमों के बारे में पहचान की है जो कि पवित्रशास्त्र में जब से यह प्रेरित हुआ है तब से घटित हुई हैं, और जिन्हें बाइबल की पुस्तकों के हमारे आधुनिक उपयोगों के लिए ध्यान में रखने की आवश्यकता है: युगान्तकारी, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत् घटनाक्रमों में विकास। आइए सबसे पहले छुटकारे से भरे हुए इतिहास में युगान्तकारी घटनाक्रमों के विकास के ऊपर ध्यान को केन्द्रित करें।

युगान्तरकारी

मसीही विश्वासियों ने निरन्तर संसार के इतिहास के ऊपर बाइबल के दृष्टिकोण को तीन चरणों में सारांशित किया है: सृष्टि, जब परमेश्वर ने सबसे पहले संसार की रचना की; पतन, जब मानवता ने पहला पाप किया और परमेश्वर की ओर से श्रापित ठहरे; और छुटकारा, वह अवधि जो कि पतन में गिरने के बाद में आई, जिसमें परमेश्वर ने हमें हमारे पापों से छुटकारा देता है। आदम और हव्वा के पाप में गिरने के तुरन्त बाद, परमेश्वर ने एक लम्बे, परन्तु छुटकारे की धीमी प्रक्रिया का आरम्भ किया। और पूरे सहस्त्राब्दी के मध्य, उसने श्रापित सृष्टि के साथ साथ और इसके भीतर छुटकारे के राज्य का निर्माण दया में भर कर किया।

कई धर्मशास्त्रियों ने यह स्वीकार किया है कि परमेश्वर का जो प्रगतिशील स्वभाव सृष्टि के ऊपर शासन करता है के परिणामस्वरूप पवित्रशास्त्र में उल्लिखित तीन युगों के बीच में समय-समय पर घटनाक्रमों में अंतराल को उत्पन्न किया है। कदाचित् सबसे ज्यादा स्पष्ट युगान्तकारी घटनाक्रम पुराने और नए नियम के मध्य में घटित हुआ। परन्तु धर्मशास्त्रियों सामान्य तौर पर पूरी

बाइबल में विभिन्न वाचाओं के अनुसार युगों की भी पहचान करते हैं, विशेषकर जो पुराने नियम में आदम, नूह, मूसा और दाऊद के साथ और नए नियम में यीशु के साथ सम्बन्धित हैं।

उदाहरण के लिए, छुटकारे के इतिहास में विभिन्न समयों पर पश्चाताप से सम्बन्धित बलिदानों के लिए दी गई व्यवस्था के लिए विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता को दिखाया गया है। मूसा के समय में, उन्हें मिलाप के तम्बू में बलिदानों की चढ़ाने की आवश्यकता थी, सुलैमान के दिनों में उन्हें मन्दिरों में बलिदानों का चढ़ाने की आवश्यकता थी। और आरम्भ के नए नियम में, उन्हें यीशु की क्रूस के ऊपर मृत्यु की आवश्यकता थी। और उत्तरोत्तर नए नियम में, यह बलिदान बिल्कुल ही बन्द हो गए।

जब हम विशेष रूप से, आज के विश्वासी होने के नाते, पुराने नियम को पढ़ते हैं – जो कि मसीह के मरने और मृत्यु में से पुन: जी उठने की प्रतिज्ञा के हैं और जो शीघ्र आने वाला है – तो जिस तरह से हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते और उसे अपने जीवन में लागू करते हैं, वह कदाचित् पुराने नियम के लोगों के द्वारा उनके जीवनों में लागू किए जाने से भिन्न होगा। परन्तु, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं कि, कई अन्य समय ऐसे भी हैं जिसमें हमें बिल्कुल भी किसी भी बात का समायोजन नहीं करना चाहिए...उदाहरण के लिए बलिदान की प्रणाली को देखिए। हमें अब और अधिक बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मसीह अब हमारा बलिदान है। इसलिए इसमें अब बहुत ही थोड़ी सी उपयोग वाली बात रह गई है। मुझे अब और अधिक मन्दिर में जाने की आवश्यकता नहीं है...निकट के मन्दिर में जहाँ पर मैं एक पशु के बलिदान को चढ़ाऊँ और उस पशु के सिर के ऊपर हाथ को रखूँ ताकि वह पशु मेरे सारे पापों को अपने ऊपर ले ले। ठीक, इसी तरह से, यहाँ ऐसे समय भी हैं जिसमें हम छुटकारे के इतिहास में आज जिस तरह से हमें पवित्रशास्त्र को उपयोग में लाना चाहिए उसे परिवर्तित कर देते हैं।

-डॉ डेनिएल एल. किम

यह इतना ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हम इस बात का संग्रह कर लेते हैं कि यहाँ पर छुटकारे से भरे हुए इतिहास में ऐसा प्रसंग आया है जो कि छुटकारे से भरे हुए इतिहास के साथ सम्बन्धित है, विशेषकर जब हम इनकी व्याख्या करते और इन्हें अपने जीवनों में लागू करते हैं, क्योंकि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि छुटकारे से भरे हुए ऐतिहासिक संदर्भ में कुछ संदर्भ स्वयं में विभिन्न तरह की एक अर्थ व्यवस्था, एक विभिन्न तरह के प्रशासन की बातों को हमारे स्वयं के संदर्भ की अपेक्षा में रखते हैं। मैं केवल एक उदाहरण दूँगा – पुराने नियम की बलिदान प्रणाली...पुराने नियम के प्रसंगों में पशु बलिदान हमसे अप्रासंगिक रूप से असम्बन्धित नहीं हैं, परन्तु वह उस मात्रा में प्रासंगिक है, जिसमें वे बलिदान मसीह में पूरे हुए हैं। इसलिए जब हम उन मूलपाठों को पढ़ते हैं, तो हमारा सार यह नहीं है कि, अरे मैंने तो केवल एक अंग को ही प्राप्त किया, एक बैल या एक कबूत्तर को ही प्राप्त किया, परन्तु मुझे मेरे पापों को ढकने के लिए मसीह की ओर देखने की आवश्यकता है। और इसलिए कई तरीकों से – यह तो मात्र एक उदाहरण है – परन्तु कई अन्य तरीकों से जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं, तो हमें इस सच्चाई को संग्रहित कर लेना चाहिए कि: अरे, यह तो छुटकारे के इतिहास के प्रशासन की पुराने नियम की वाचा के पहलू का स्थान ले रही है। उदाहरण के लिए, हम अब और अधिक ईशतन्त्र की अधीनता में नहीं रहते हैं, इसलिए यहाँ पर ऐसी बातें हैं जो कि इस्राएल के जीवन के लिए सच्ची हो सकती हैं परन्तु आज के विश्वासियों के लिए सच्ची नहीं हो सकती हैं। हमें न केवल एक प्रसंग के तुरन्त व्याकरणीय संदर्भ को सदैव ध्यान में रखना चाहिए परन्तु साथ ही छुटकारे से भरे हुए इतिहास के संदर्भ को भी ताकि हम ऐसी स्थिति में आ जाएं जहाँ पर हम विश्वासियों के लिए उचित उपयोग को नई वाचा की वास्तविकता में लागू कर सकें।

- डॉ राबर्ट जी. लिस्टर

कई तरह से, बाइबल का इतिहास एक बढ़ते हुए वृक्ष के समान है। प्रत्येक वृक्ष एक बीज से बढ़ता हुआ, एक तना और अन्तत: पूरी तरह से विकसित वृक्ष बन जाता है। जो कुछ उस वृक्ष में होता है उसमें अन्तत: स्वयं में आरम्भिक बीज निहित है। परन्तु समय के बीतने के साथ ही वृक्ष बढ़ता है और विकसित होता हुआ पूरी तरह से परिपक्व बन जाता है।

कुछ इसी तरह से, छुटकारा बाइबल के इतिहास के साथ साथ बढ़ा और विकसित हुआ है। और हमें इन घटनाक्रमों के विकास का लेखा देना होगा जब हम बाइबल को स्वयं के जीवनों में लागू करते हैं। घटनाक्रमों के ये विकसित नमूने हमें यह शिक्षा देते हैं कि पूरी

बाइबल हमारे लिए प्रासंगिक और आधिकारिक है, परन्तु साथ ही यह भी कि पुराने प्रकाशन को सदैव उत्तरोत्तर प्रकाशन के आलोक में लागू किया जाना चाहिए।

युगान्तकारी घटनाक्रम के विकास की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए हम सांस्कृतिक घटनाक्रम के विकास के विचार की खोज करें जो कि हमारी आज की संस्कृति को उस संस्कृति से अलग करती है, जिसमें बाइबल को परोक्ष में सम्बोधित किया गया है।

सांस्कृतिक

सांस्कृतिक घटनाक्रम के विकास के बारे में सोचते हुए जो कि पवित्रशास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच में हुआ, हमें दोनों अर्थात् समानताओं और विभिन्नताओं की पहचान करनी आवश्यक है। समानताओं के सम्बन्ध में, हमें इस तरह के प्रश्नों को पूछना चाहिए "किस तरह की संस्कृति के नमूनों का हम सामना करते हैं जिन्हें हम अब्राहम के अनुभव की समानता में निकटता से पाते हैं?" और "कैसे हमारी संस्कृति दाऊद के दिनों जैसी है?" और विभिन्नताओं के संदर्भ में, हमें इस तरह के प्रश्नों को पूछना चाहिए कि "कैसे मानवीय संस्कृति मुख्य रूप से पुराने नियम के प्राचीन इतिहास से भिन्न हो गया है" और "कौन सी रीति रिवाज और प्रथाएँ भिन्न हैं?" इस तरह के प्रश्नों के लिए उत्तर में महत्वपूर्ण निहितार्थ इस तरीके से दिए हुए हैं, जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे अपने जीवनों में लागू करते हैं।

जिस संस्कृति में बाइबल लिखी गई थी वह स्पष्ट तौर पर हमारी आज की संस्कृति से भिन्न थी। हममें से बहुत से लोग कृषक, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नहीं रह रहे हैं। कुछ लोग ही रह रहे हैं, परन्तु हममें से बहुत से पश्चिम के लोगों के साथ ऐसा नहीं है। और इसलिए हमें कुछ परिवर्तनों को करने की आवश्यकता है. और न ही हम 1000 ई. पूर्व., रह रहे हैं। जहाँ पर कारोबार जो कि बैतलहम में शहर के मुख्य दरवाजे के बाहर किया जाता था – इसे आप रूत की पुस्तक में पढ़ सकते हैं। और आप जानते हैं कि उन दिनों में आप कानूनी करार कैसे किया करते थे? ठीक इसी तरह से, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आप अपनी संस्कृति के अनुसार जूतों को न उतारते हों और एक तरह से हाथों को मिलाते हैं। हो सकता है कि यह एक विचित्र बात हो। हम भिन्न संस्कृति में रहते हैं, जहाँ पर आप एक करार को हस्ताक्षर करके अनुबन्धित करते हैं और या फिर आप के पास भिन्न तरह का अनुबन्ध होता है। भिन्न संस्कृतियों में भिन्न तरीकों से व्यवसाय किया जाता है, भिन्न तरीके से पुरूषों और स्त्रियों के बीच में सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। सभी प्रकार की बातों का विभिन्न संस्कृति में भिन्न तरह से अभिव्यक्ति होगी। हमें तो केवल उसके प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए और स्वीकार करना चाहिए कि बाइबल के पास उसकी बातों के लिए स्वयं का तरीका है। हम ऐसी संस्कृति में रहते हैं जहाँ पर बातों को भिन्न तरीके से किया जाता है। परन्तु फिर भी, बाइबल ने हमें ऐसे सिद्धान्त दिए हैं कि कैसे हम अपने व्यवसायों को कर सकते हैं; कैसे हम इसे ईमानदारी के साथ कर सकते हैं। आप रूत की पुस्तक में से पढ़ते हैं। और हमें नैतिक ईमानदारी के सिद्धान्त को हमारे व्यवसायिक लेन देने में लागू करना चाहिए, चाहे हम अपने जूतों को ही न उतारें जैसा कि वे उतारते थे।

-डॉ पीटर वॉकर

जब हम हमारी वर्तमान की परिस्थिति के बारे में सोचते हैं और मूल श्रोताओं के समय के साथ तुलना करते हैं, तो हमें स्वीकार करना चाहिए कि यह लगभग नए नियम के समय से 2,000 वर्ष पहले का समय है और अक्सर 3,000 या पुराने नियम में और भी ज्यादा अतीत के समय के बारे में है। इसलिए इसमें भिन्नताएँ, सांस्कृतिक भिन्नताएँ हो सकती हैं, जो हमें मूल श्रोताओं के अनुभव से दूर कर देती है। उनमें से एक सबसे स्पष्ट यह है कि प्रौद्योगिकी नाटकीय रूप से परिवर्तित हुई है। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम उच्च दृश्य संस्कृति के लोग हैं, जो एक ऐसी संस्कृति है जिसमें तीव्र गति से संचार का प्रयोग होता है, एक ऐसी संस्कृति है जो कि अन्य के साथ सम्प्रेषण के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग करती हुई इससे लिपटी हुई है। और अतीत में, जब 2,000 वर्ष पहले की बात के बारे में सोचा जाता है, जब यूहन्ना ने उसकी पुस्तक प्रकाशितवाक्य को लिखा, तो उसने इसे एक चक्रीय अर्थात् चलित पत्र के रूप में लिखा जिसे एक व्यक्ति एक समाज से दूसरे समाज में स्वयं लेकर जाता है। ऐसा करने में कदाचित् कई दिनों का समय लग जाता था क्योंकि वह एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में यात्रा करते हुए जाता था। वहाँ पर हमारे जैसा त्वरित सम्प्रेषण नहीं था। अन्य पहलू यह है, जो कि बहुत ही ज्यादा स्पष्ट है, जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ते हैं, वह यह है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मूलभूत रूप से सुनने के लिए लिखी गई थी। इसलिए, पुस्तक के बिल्कुल आरम्भ में ही ऐसा कहा गया है

कि उस व्यक्ति के ऊपर आशीष जिसने इसे किसी दूसरे व्यक्ति को पढ़ कर सुनाया और उन सब पर जो इसे सुन रहे थे जो कि निर्देशात्मक तरीके से लिखा हुआ है जिसे मूल रूप में समझा गया था, अर्थात्, एक व्यक्ति पूरी पुस्तक को श्रोताओं को सुनाने के लिए पढ़ता था। हमारे लिए, यह धीमा होना बहुत ही आसान है जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ते हैं। हम एक आयत के ऊपर रूक सकते हैं और इस पर मनन कर सकते हैं और इसका जो कुछ भी अर्थ है उसे समझ सकते हैं। जबकि, मूल श्रोताओं के लिए, 22 अध्याय उन के ऊपर बहते हुए आते थे। इस तरह से, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अनुभव बिल्कुल भिन्न है। और मैं सोचता हूँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के मूल श्रोताओं पर पड़ने वाले परिणामों में से एक यह था कि वे इससे अभिभूत हो जाते थे, वे इसे पूरी तरह समझ नहीं सकते थे और किसी स्थान पर वे इसके विवरण को प्राप्त करने के लिए कम चिन्तित होते थे और इसकी अपेक्षा वे इसकी सामान्य मंशा को पूरे रूप में समझते थे और इसे पूरी पुस्तक को उनके अपने आशय में बोलने की अनुमति देते थे। और इसमें दिए हुए चित्र ज्यादा से ज्यादा उनके हृदयों को छूना आरम्भ करते थे इसकी अपेक्षा कि वे इसमें से सब कुछ को समझने के योग्य होते। इसलिए, यह केवल एक उदाहरण है कि कैसे सांस्कृतिक विभिन्नताएं पवित्रशास्त्र को पढ़ने के हमारे दृष्टिकोण और हमारी समझ को वास्तव में परिवर्तित कर सकती हैं।

-डॉ डेविट डब्लूय. चॉपमैन

युगान्तकारी और सांस्कृतिक घटनाक्रमों के विकास के अलावा, हमें अपने ध्यान को व्यक्तिगत् घटनाक्रमों के विकास के ऊपर भी केन्द्रित करना चाहिए जो बाइबल के मूल श्रोताओं को आज के लोगों से भिन्न करते हैं।

व्यक्तिगत्

बाइबल के लोगों और हमारे समकालीन संसार में रहने वाले लोगों के मध्य में काफी सारी समानताएं हैं, परन्तु हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि आधुनिक और प्राचीन लोगों के बीच कई भिन्नताएं भी हैं। और यदि हम बाइबल आधारित मूलपाठ को उचित तरीके से लागू करने की आशा करते हैं, तो हमें इन व्यक्तिगत् विविधताओं को भी ध्यान में रखना होगा।

उदाहरण के लिए, हमें इस तरह के प्रश्नों को पूछना चाहिए जैसे कि, "कैसे हमारे व्यक्तिगत् जीवन की तुलना उनके साथ की जा सकती है जिन्हें हम बाइबल में देखते हैं?" "समाज में हमारी क्या भूमिका है?" "हमारी आत्मिक परिस्थिति क्या है?" कैसे हम प्रभु की सेवा इस चरित्र या उस चरित्र की अपेक्षा में कर रहे हैं?" कैसे हमारे विचार, कार्य और भावनाओं की अपेक्षा उनके साथ की जा सकती है जिन्हें हमें बाइबल के लेखकों में देखते हैं?" प्राचीन लोगों और आधुनिक लोगों के मध्य इन विविधताओं को संज्ञान में लेते हुए, हम उत्तम तरीके से समझ सकते हैं कि कैसे बाइबल को हमारे जीवनों की विशेष परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है।

पवित्रशास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोताओं के मध्य युगान्तकारी, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत् घटनाक्रम के विकास की पहचान करना हमारे समय में बाइबल को लागू करना सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू होंगे। परन्तु यदि हम इसे सावधानी से करें, तो यह हमें पवित्रशास्त्र को हमारे जीवनों में लागू करने के लिए एक लम्बे समय तक चलने वाली ऐसी प्रक्रिया जो कि परमेश्वर के लिए सम्मान की होगी, अन्यों के लिए दायित्वपूर्ण होगी, और हमारे समय के लिए उपयुक्त होगी।

सारांश CONCLUSION

पवित्रशास्त्र को जीवन में लागू करना अर्थात् इसके उपयोग के ऊपर इस अध्याय में, हमने उन मूलभूत तथ्यों की खोज की है जो कि बाइबल के मूल अर्थ को हमारी आधुनिक परिस्थितियों से सम्बन्धित करने में सहायता दे सकती हैं। हमने पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोगों की आवश्यकता के बारे में बात की है। हमने मूल और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में उन सम्पर्कों के ऊपर विचार विमर्श किया है जो कि हमें यह निर्धारित करने में सहायता कर सकते हैं कि पवित्रशास्त्र को कैसे लागू किया जाता है। हमने घटनाओं के कुछ ऐसे विकासों के ऊपर ध्यान दिया है जो कि उस समय से घटित हुई हैं जब पवित्रशास्त्र लिखा गया था, विशेष करके उन घटनाओं के विकास के तरीकों के ऊपर ध्यान दिया है, जो कि हमें हमारे उपयोगों को समकालीन श्रोताओं के अनुकूल प्राप्त करने के लिए मजबूर कर सकती है।

हमें सदैव स्वयं को स्मरण दिलाने की आवश्यकता है कि पवित्रशास्त्र उत्तरोत्तर पीढ़ियों के लिए नहीं लिखा गया था। इसके विपरीत, वे पूरे इतिहास में परमेश्वर के लोगों के लिए लिखे गए थे कि वे प्रेम और आज्ञापालन करें। और इसी कारण से, बाइबल पूरी तरह से

उस समय के लिए प्रासंगिक थी, जब वह पहले लिखी गई थी, उसी तरह से हमारे समय में भी है। हमें उन घटनाओं के विकास का आंकलन करना है जो बाइबल के दिनों और हमारे दिनों के मध्य में घटित हुई हैं, परन्तु जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा को न केवल अतीत के लोगों के लिए ही जान सकते, अपितु आज के दिनों में रहने वाले लोगों के लिए भी जान सकते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम